पाएगा अपनी मंजिल वही जो चलता रहता है बिना रुके।
जीत उसी की होती है जो कभी माया के आगे नहीं झुके।
परिवर्तन के दृढ़ निश्चयी बनो जैसे होती है ठोस चट्टान।
रहो सदा तुम अचल अडोल और बन जाओ अंगद समान।
दृढ़ निश्चयी के आगे माया रावण भी हो जाती है कमजोर।
आत्मिक स्थिति बनी रहे तो विकारों का मिट जाता शोर।
अब डगमग डगमग नहीं होना मंजिल पर कड़ी नजर रखना।
थोड़ा सा भी ध्यान हटा तो माया गिरा देगी ये ध्यान रखना।
ॐ शांति